



## अन्तर्जाल (Internet) पर हिन्दी का प्रयोग

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद एशिया के जिन देशों को विदेशी प्रभुत्व से छुटकारा मिला, उन में चीन तथा भारत जैसे विशाल देश तथा दक्षिण कोरिया जैसे छोटे देश शामिल थे। सन् 1950 में भारत ने लोकतांत्रिक पद्धति तथा चीन ने साम्यवादी पद्धति अपनाई। स्वतंत्र भारत को विभाजन की त्रासदी से जूझना पड़ा और चीन को गृहयुद्ध से, तत्पश्चात् अमेरिका को वियतनाम तथा कोरिया के साथ युद्धों में उलझना पड़ा। भारत को अमेरिका, इंग्लैंड और रूस आदि देशों से तकनीकी सहायता मिलती रही, परंतु सन् 1950 से लेकर सन् 1959 तक चीन को केवल रूस से सहायता मिली। इसके बाद चीन अपने बलबूते पर लड़ता रहा। चीन ने, शासन तथा अध्ययन के सभी स्तरों पर, चीनी भाषा का प्रयोग किया, इसके द्वारा चीनी भाषा एक परिष्कृत, बहुमुखी, आधुनिक ज्ञान की भाषा बनी। चीन की साक्षरता दर 85 प्रतिशत तथा भारत की दर 55 प्रतिशत है। प्रगति के सभी मानकों के अनुसार, चीन भारत से अधिक शक्तिशाली राष्ट्र है।

विज्ञान प्रकाश के पिछले अंकों में अमेरिका के विश्वविद्यालयों में एशिया की कुछ भाषाओं, चीनी, अरबी, हिन्दी, तथा कोरियन आदि के अध्ययन के आंकड़े प्रस्तुत किए गए हैं। इनके अनुसार, हिन्दी का शिक्षण, चीनी भाषा से ही नहीं, कोरियन भाषा से भी पिछड़ा है। विश्वविद्यालयों में भाषाई शिक्षण से हटकर, यदि हम, अन्तर्जाल पर विभिन्न भाषाओं की उपस्थिति देखें तो फिर चीनी भाषा का प्राबल्य सामने आता है। विकीपिडिया (Wikipedia) की वेबसाइट के अनुसार, अंग्रेजी का प्रयोग (27%), चीनी (23%), स्पेनिश (8%), जापानी (5%), पोर्तुगीज तथा जर्मन, प्रत्येक (4%), रूसी (3%), कोरियन (2%) किया जाता है।

अंग्रेजी को अन्तर्जाल पर प्रथम स्थान दिया जाना आश्चर्यजनक नहीं है। अंग्रेजी ब्रिटेन के अतिरिक्त अमेरिका, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया तथा अफ्रीका के अनेक देशों में मातृभाषा के तुल्य माना जाता है। अन्तर्जाल पर हिन्दी की अनुपस्थिति इस बात का द्योतक है कि हिन्दी को आधुनिक भाषा बनाना भारत सरकार की प्राथमिकता नहीं है। आज चीनी, अमेरिका के पश्चात् विश्व की दूसरी अर्थव्यवस्था है। कहा जाता है कि एक दशक पश्चात्, अमेरिका के स्थान पर चीनी विश्व की प्रथम अर्थ-व्यवस्था बन जाएगी, यह भी संभव है कि चीनी अन्तर्जाल की प्रथम भाषा बन जाए।

पिछले दो दशकों में अन्तर्जाल पर अंग्रेजी के माध्यम से अमेरिका के प्रवासी भारतीय वैज्ञानिकों द्वारा महत्त्वपूर्ण कार्य किया जा रहा है। भारतीय वैज्ञानिक भी इस कार्य में प्रवासी भारतीयों से पीछे नहीं हैं। प्रवासी भारतीयों में डॉ. साम पित्रोदा (वास्तविक नाम, सत्यनारायण गंगाराम पित्रोदा) अग्रगण्य हैं। वे एक विश्व-विख्यात दूरसंचार (Telecommunication) उद्योगपति एवं कुशल आविष्कारक हैं। सन् 1984 में वे, तत्कालीन प्रधानमंत्री राजीव गांधी के तकनीकी सलाहकार बनकर भारत आए थे। दूर-संचार क्षेत्र में भारत की प्रगति का बहुत कुछ श्रेय डॉ. पित्रोदा को जाता है।

बीस साल बाद, सन् 2004 के चुनाव के पश्चात् भारत के प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह के बुलाये जाने पर, वे फिर भारत आए, सन् (2004-2008) के दौरान उनकी अध्यक्षता में आयोजित भारत के राष्ट्रीय ज्ञान आयोग (National Knowledge Commission) की संस्तुति में कहा गया था कि भारत को विज्ञान तथा तकनीकी क्षेत्रों में श्रेष्ठ बनाने के लिए, आगामी दशक में आई.आई.टी. के स्तर के, आज से दस गुने विश्वविद्यालय खोलने की आवश्यकता है। उनका उद्देश्य, अन्तर्जाल द्वारा समाज के निम्न वर्ग तक आधुनिक ज्ञान पहुंचाना है। डॉ. पित्रोदा की विभिन्न सेवाओं के लिए सन् 2009 में उन्हें पद्मभूषण पुरस्कार से विभूषित किया गया था।

सन् 2001 में, बंगलुरु में विप्रो (Vipro) नामक कंपनी के मालिक उद्योगपति श्री अजीम हाशिम प्रेमजी ने, एक अ-लाभ न्यास (Non-Profit Foundation) की स्थापना की। इसका नाम है अजीम प्रेमजी न्यास। न्यास का उद्देश्य है, प्रेमजी विश्वविद्यालय का संचालन करना। विश्वविद्यालय का प्रारंभ इस वर्ष 100 एकड़ के एक परिसर पर हो रहा है। विश्वविद्यालय का उद्देश्य समाज के शोषित वर्ग के विद्यार्थियों तक, अन्तर्जाल के माध्यम से आधुनिक ज्ञान पहुंचाना है। विश्वविद्यालय की दो विशेषताएं हैं : पाठ्यक्रम का निर्माण स्थानीय प्रोफेसरों द्वारा किया जाएगा, वे शिक्षकों का प्रशिक्षण भी देंगे।

इस संपादकीय की सामग्री किसी पुस्तकालय से नहीं, बल्कि घर बैठे, अन्तर्जाल के माध्यम से ली गई है। यह सामग्री हिन्दी में नहीं, अंग्रेजी में थी। मेरा अनुमान है कि 90 प्रतिशत भारतीय उसका हिन्दी में अनुवाद नहीं कर सकेंगे। क्या यह सामग्री, अन्तर्जाल पर हिन्दी में उपलब्ध कराई जा सकती थी? इसका उत्तर है, हां। हमें याद रखना है जब तक, सभी स्तरों पर, शिक्षा का माध्यम भारतीय भाषाएं नहीं होंगी, समाज के वंचित वर्ग तक हम आधुनिक ज्ञान नहीं पहुंचा सकेंगे।

राम जैन्सरी